

33.0 माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन

- निशा यादव, शोधकर्त्री, शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
Email-nishayadav107977@gmail.com
- प्रो. अनिल कुमार पाण्डेय, शिक्षाशास्त्र विभाग, बी एस एन वी पी जी कालेज, लखनऊ

शोध-सार

संवेगात्मक बुद्धि का सम्प्रत्यय एक नवीन अवधारणा है भावनात्मक बुद्धिमत्ता का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में महत्व बढ़ता ही जा रहा है। वर्तमान समय में हमारे समाज में यह प्रचलन है कि अधिक बुद्धिलब्धि वाले व्यक्ति शिक्षा, रोजगार, जीवन के अन्य क्षेत्रों में कम बुद्धिलब्धि वाले व्यक्तियों की तुलना में अधिक सफल सिद्ध होते हैं, परन्तु मनोवैज्ञानिकों के अनुसार- अधिक बुद्धिलब्धि का होना ही सफलता की गारंटी नहीं है वरन् सफलता के लिए संवेदनात्मक बुद्धि, सहयोग तथा पारिवारिक पृष्ठभूमि जैसे कारक भी सार्थक भूमिका निभाते हैं।

जीवन के व्यापक क्षेत्र में आगे बढ़ने तथा सफलता प्राप्त करने के लिए संवेदनात्मक बुद्धि बहुत महत्वपूर्ण होती है। विश्लेषणात्मक, सर्जनात्मक तथा व्यावहारिकता में उचित समन्वय से संवेदनात्मक बुद्धि का अधिकतम विकास किया जा सकता है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता व्यक्तियों की संज्ञानात्मक क्षमता को उन्नत बनाए रखने के साथ-साथ जीवन के हर पहलु को सफलता की ऊंचाईयों तक पहुंचाने में सहायक भूमिका निभाती है। आधुनिक युग में व्यक्ति को अपनी भावनात्मक बुद्धिमत्ता को स्वस्थ बनाए रखने की अत्यधिक आवश्यकता है क्योंकि व्यक्ति की अन्य सफलताएं संवेगात्मक बुद्धि पर ही केंद्रित है। इस शोध पत्र का उद्देश्य भावनात्मक बुद्धिमत्ता के शोध आधारित मॉडल को देखना व छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका का अध्ययन करना है।

मुख्य शब्द- भावनात्मक बुद्धिमत्ता, शैक्षिक उपलब्धि, आत्म सम्प्रत्यय, कार्य निष्पादन, तनाव मुक्ति, मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक संबंध।

प्रस्तावना

हम सभी जानते हैं कि बड़ी संख्या में ऐसे लोग हैं जो शैक्षिक रूप से बहुत अच्छे या कलात्मक रूप से प्रतिभाशाली हैं, लेकिन अपने सामाजिक जीवन में असफल हैं, चाहे वह विद्यालय में हो या छात्रों के वास्तविक जीवन से संबंधित हो। वे पारस्परिक संबंधों को प्रभावी ढंग से संभालने में विफल रहते हैं। वे अपनी भावनाओं को प्रबंधित नहीं कर सकते और न ही दूसरों की भावनाओं को पहचान और प्रबंधित कर सकते हैं उन्हें विद्यालय में, नौकरी में, वास्तविक जीवन में भी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कुछ मनोवैज्ञानिकों के अनुसार - कठिनाइयों का प्रमुख स्रोत भावनात्मक बुद्धि की कमी के कारण हो सकते हैं।

डैनियल गोलमैन (1995) में “इमोशनल इंटेलिजेंस” नामक अपनी पुस्तक में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विचार को लोकप्रिय बनाया। यह पुस्तक ‘येल विश्वविद्यालय’ के मनोवैज्ञानिक पीटर सलोवी और जॉन मेयर के कार्य पर आधारित थी।

सलोवी और मेयर (1990) में भावनात्मक बुद्धिमत्ता शब्द को भावनात्मक जानकारी के रूप में सही और कुशलता में संसाधित करने की क्षमता के रूप परिभाषित किया।

पिछले एक दशक में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और योग्यता का विषय शिक्षकों के लिए बढ़ती दिलचस्पी का विषय बन गया क्योंकि वे जटिल दुनिया के तनाव और चुनौतियों से प्रभावित छात्रों के साथ बातचीत करते हैं। कुछ शोध बताते हैं कि छात्रों को उनकी भावनात्मक दक्षताओं का निर्माण करने में मदद करने वाले कार्यक्रमों का उन पर लाभकारी प्रभाव पड़ता है अपशब्दों, डराने,

धमकाने जैसी उनकी असामाजिक गतिविधियों में काफी कमी आई है और वे अधिक सहयोगी, सहानुभूतिपूर्ण व शांत हो गये। लक्षण न केवल विद्यालय और माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाते हैं बल्कि उन्हें कक्षा के बाहर जीवन के लिए भी तैयार करते हैं।

पीटर सलोवी और जॉन मेयर (1997) के अनुसार भावनात्मक बुद्धिमत्ता, भावनात्मक संवेदनशीलता, भावनात्मक स्मृति, भावनात्मक प्रसंस्करण और भावनात्मक सीखने की क्षमता के लिए व्यक्ति की सहज क्षमता को दर्शाती है।

साहित्य समीक्षा

990 के दशक में इमोशनल इंटेलिजेंस में रुचि बढ़ी, और दुनिया भर में कई लोगों ने शैक्षिक उपलब्धि में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका और महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए।

येल विश्वविद्यालय के पीटर सलोवी के अनुसार, “पिछले कुछ दशकों में भावनाओं और बुद्धि के बारे में धारणाएं बदल गई हैं, जहां बुद्धि कभी पूर्णतः थी लोग यह पहचानने में सक्षम थे कि जीवन में और भी कुछ है, जहां भावनाएं विनाश थी लोग पहचानने लगे, कि इसका पर्याप्त मूल्य हो सकता है।”

शर्मा (2000) ने अध्ययन किया, “भावनात्मक बुद्धि जीवन में एक लक्ष्य निर्धारित करने इसे प्राप्त करने की दिशा में काम करने, बातचीत करने और इसे महसूस करने की क्षमता को संदर्भित करती है।”

प्रधान, बंसल और बिस्वाल (2005) ने अध्ययन किया कि हाल के दिनों में मनोवैज्ञानिकों ने महसूस किया है कि जीवन में सफलता प्राप्त करने हेतु केवल बुद्धिमत्ता ही काफी नहीं है, यह महसूस किया गया कि तर्क, क्षमता, जो बुद्धि में चिंता का केन्द्र है, किसी व्यक्ति की सफलता का एक मात्र कारण नहीं है, जो छात्रों की रचनात्मक क्षमता, भावनात्मक कौशल और पारस्परिक कौशल अधिक मायने रखता है।

फैट (2002); ओवेश (2004) ने अध्ययन किया कि उच्च स्तर पर सफलता के लिए लगभग 90% का श्रेय भावनात्मक बुद्धिमत्ता को दिया जाता है।

पीटर और सलोवी - शैक्षिक उपलब्धि और व्यावसायिक स्थिति के रूप में परिभाषित केवल संज्ञानात्मक क्षमताओं और IQ पर विचार करना जीवन की सफलता की भविष्यवाणी करने में अपर्याप्त है।

बेनिस (2001) ने निष्कर्ष निकाला कि उच्च व्यक्तिगत और संगठनात्मक सफलता प्राप्त करने का श्रेय बुद्धि से परे परिपक्वता, सहानुभूति और संचार जैसे कारकों को दिया जाता है।

शोध पत्र के उद्देश्य

इस शोध पत्र के उद्देश्य निम्नलिखित हैं जो इस प्रकार हैं -

- छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका का अध्ययन करना।
- छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में आत्म अवधारणा की भूमिका का अध्ययन करना।
- छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के साथ - साथ सामाजिक संबंधों की भूमिका का अध्ययन करना।
- छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को स्वस्थ बनाए रखने में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
- छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को उन्नत बनाए रखने में तनाव मुक्त वातावरण की भूमिका का अध्ययन करना।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता - संवेदनात्मक शब्द का संबंध संवेगों से है तथा बुद्धि शब्द का संबंध संज्ञानात्मक क्षमता से होता है। अतः संवेदनात्मक बुद्धि से तात्पर्य संवेगों को सही ढंग से प्रबंधित करने की संज्ञानात्मक क्षमता से होता है।

“संवेगात्मक बुद्धि व्यक्तित्व के निम्न स्तरों पर स्थित संवेदनात्मक स्व - प्रत्यक्षीकरणों का एक समूह है।” K.V. Petrides

“उच्च व्यक्तिगत और संगठनात्मक सफलता प्राप्त करने का श्रेय बुद्धि से परे परिपक्वता, सहानुभूति और संचार जैसे कारकों को दिया जाता है।” बेनिस (2001)

बहुत सारे ज़मीनी शोध, अनुभवजन्य शोध है, जो सुझाव देते हैं कि उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता एक स्टार प्रदर्शन के लिए संज्ञानात्मक क्षमताओं की तुलना में दोगुना महत्वपूर्ण है। कैली & कैपलान (1993)

भावनात्मक बुद्धिमत्ता संरचना

- आत्म जागरूकता
- आत्म प्रबंधन
- सामाजिक जागरूकता
- संबंध प्रबंधन

यदि IQ किसी व्यक्ति को अच्छी नौकरी दिलाती है तो यह भावनात्मक बुद्धिमत्ता इसे बनाए रखने और अपने कार्य स्थल में सफल होने में मदद करेगी। एम्मरलिंग &गोलमैन 2003; चेनिर्स एट अला।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षिक उपलब्धि - छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान, बोध, कौशल, अनुप्रयोग आदि योग्यताओं की मात्रात्मक अभिव्यक्ति से है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के द्वारा छात्रगण अपनी विभिन्न बौद्धिक योग्यताओं का विकास किया है, यही उनकी सम्प्राप्ति का सूचक होता है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता को आत्म जागरूकता, सहानुभूति, आत्म प्रेरणा, भावनात्मक स्थिरता, संबंधों के प्रबंधन, अखंडता, आत्म विकास, मूल्य अभिविन्यास और सामाजिक कौशल के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। हाइड पेटे & धार (2001)

आत्म अवधारणा और भावनात्मक बुद्धिमत्ता - जैसा कि पिछले अध्ययनों से स्पष्ट है कि आत्म अवधारणा व्यक्ति के प्रति उनका दृष्टिकोण है यदि किसी व्यक्ति का अपने बारे में सकारात्मक दृष्टिकोण है तो उसकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता उच्च हो सकती है। जब भी स्व धारणा सकारात्मक होती तो व्यक्ति अधिक प्रयासों के साथ लक्ष्यों को प्राप्त करने को प्रेरित होता है। आत्म अवधारणा और भावनात्मक बुद्धिमत्ता में सकारात्मक संबंध है।

छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का महत्व

जीवन में व्यक्ति की सफलता व प्रसन्नता प्राप्ति के लिए सामान्य बुद्धि के साथ - साथ संवेगात्मक बुद्धि का भी महत्वपूर्ण स्थान रहता है। सामान्य बुद्धि व्यक्ति को पद प्रतिष्ठा तो दिलाती है, परंतु उस पर बने रहने के लिए वांछित कौशल संवेदनात्मक बुद्धि से प्राप्त होते हैं संवेदनात्मक बुद्धि संबंधों को दृढ़ बनाने, कार्य में सफलता दिलाने, वैयक्तिक लक्ष्यों को प्राप्त करने तथा कैरियर बनाने में सहायता करती हैं

मानव जीवन में संवेगात्मक बुद्धि के महत्व को 4 पक्षों कार्य निष्पादन, तनाव मुक्त, मानसिक स्वास्थ्य तथा सामाजिक संबंध के सापेक्ष स्पष्ट किया जा सकता है। वस्तुतः संवेगात्मक बुद्धि मानव जीवन के इन चार पक्षों को अत्यधिक प्रभावित करती हैं।

- **कार्य निष्पादन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता** - व्यक्ति की भावनात्मक बुद्धि उसे उसके कार्य निष्पादन में सकारात्मक ढंग से सहायता करती है। उच्च भावनात्मक बुद्धि वाले व्यक्ति अपने कार्य स्थल की सामाजिक जटिलताओं को अच्छे ढंग से निष्पादित कर पाते हैं अन्य व्यक्तियों को अभिप्रेरित कर पाते हैं, नेतृत्व प्रदान कर पाते हैं तथा अपने कैरियर के उच्चतम शिखर तक पहुंचने में सफल हो जाते हैं।
- भावनात्मक दक्षताएं भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर आधारित सीखी गई क्षमताएं हैं जिसके परिणामस्वरूप कार्यों में उत्कृष्ट प्रदर्शन होता है, हमारी भावनात्मक बुद्धिमत्ता व्यावहारिक कौशल सीखने की हमारी क्षमता निर्धारित करता है जो आत्म जागरूकता, प्रेरणा, आत्म नियमन, सहानुभूति और सामाजिक कौशल विकसित करने पर आधारित है। डेनियल गोलमैन (1998)

- तनाव मुक्ति में संवेगात्मक बुद्धि - तनाव मुक्ति में भी संवेगात्मक बुद्धि एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। तनाव के कारण व्यक्ति का शरीर तथा मन दोनों ही नकारात्मक रूप से प्रभावित होते हैं, तनाव के काफी समय तक बने रहने से उच्च रक्तचाप, हृदयाघात तथा उग्रदराजी की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। उच्च भावनात्मक बुद्धि वाले व्यक्ति अपने तनाव को कम करके दिशा परिवर्तित करके एवं संवेगों पर नियंत्रण रखकर इन नकारात्मक सम्भावनाओं को कम कर देते हैं।
- **Journal of consumer Research** ने दिखाया कि भावनात्मक बुद्धि लोगों को यह महसूस करने में, मदद करके निर्णय लेने में भूमिका निभा सकता है कि उनकी भावनाएं उनके द्वारा चुने गए विकल्पों को प्रभावित कर सकती हैं।
- **मानसिक स्वास्थ्य बनाने में संवेगात्मक बुद्धि** - अनियमित तनाव का दुष्प्रभाव व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य पर भी पड़ता है। ऐसे व्यक्ति प्रायः भगनाशा तथा कुण्ठा के जल्द शिकार हो जाते हैं जब व्यक्ति अपने संवेगों को समझने व तदनुसार कार्य करने में असमर्थ रहता है तब उसकी मनोस्थिति में झूले के समान हानिकारक ढंग से उतार-चढ़ाव आते हैं। इसी प्रकार से दृढ़ व स्थायी मानसिक संबंध बनाने में असफल व्यक्ति में अकेलेपन व अलगाव की भावना पनपने लगती हैं। परन्तु उच्च भावनात्मक बुद्धि से युक्त व्यक्ति अपना मानसिक स्वास्थ्य बनाए रखने में सफल होता है।
- **सामाजिक संबंधों में भावनात्मक बुद्धि** - कोई व्यक्ति अन्य व्यक्तियों से किस प्रकार के संबंध बना पाता है, उनका किस प्रकार से निर्वाह करता है, यह भी काफी हद तक उसकी भावनात्मक बुद्धि पर निर्भर करता है। कोई भी व्यक्ति अपने व दूसरे के संवेगों को समझकर उनके प्रभाव को जानकर तथा उनका सही ढंग से प्रबंधन करने पर ही अन्यो के साथ सकारात्मक संबंध बना सकता है तथा उनका निर्वाह कर सकता है। अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने व दूसरों की भावनाओं को समझने पर ही कोई व्यक्ति प्रभावी ढंग से संप्रेषण कर पाता है जो वैयक्तिक व सामाजिक जीवन में तथा कार्य स्थल पर अन्य व्यक्तियों से घनिष्ठ संबंध बनाने में समर्थ होता है। उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाला व्यक्ति ही इस दिशा में प्रभावी ढंग से क्रियाशील हो सकता है।
- **रेटी (2019)** के अनुसार - “मस्तिष्क, एक सामाजिक मस्तिष्क है, न्यूरोन्स अपने पड़ोसियों के साथ संबंध बनाते हैं या संपर्क के अभाव में मर जाते हैं।”

निष्कर्ष

भावनात्मक बुद्धिमत्ता की अवधारणाओं का विश्लेषण करने के बाद निष्कर्ष सिद्ध करती हूँ कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता में उम्र, शिक्षा और अनुभव के साथ सुधार होता है। छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता का प्रभाव पड़ता है अध्ययन में पाया कि भावनात्मक बुद्धि से संतुलित छात्रों की शैक्षिक प्रदर्शन में कार्य कुशलता में धनात्मक प्रभाव पड़ता है और यह भी पता चला कि कम उम्र के छात्रों में संवेगात्मक अस्थिरता होती है। परंतु बढ़ती उम्र के साथ-साथ उनमें भावनात्मक ठहराव आता है और उनके शैक्षिक प्रदर्शन में सुधार होता है।

निष्कर्षतः भावनात्मक बुद्धिमत्ता जीवन के हर पहलू से जुड़ी हुई है और वर्तमान में इसका अत्यधिक महत्व है। भूतकाल में भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर ज्यादा जोर नहीं दिया जाता था। इसलिए इस भूल को सुधारकर भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

- गुप्ता, एस.पी. (2022). *उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान सिद्धांत एवं व्यवहार*। शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज।
- गुप्ता, एस.पी. (2022). *अनुसंधान संदर्शिका*। प्रयागराज: शारदा पुस्तक भवन, पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स।
- कौरपरविंदर (2010)। *किशोरों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता, मेटाकॉग्निशन और व्यक्तित्व लक्षणों के संबंध में उनके सीखने के परिणामों का एक अध्ययन*।
- वैन डी काम्प, एम. एडमिरल, डब्ल्यू., वैन डी, जे., और रिजलासडैम, जी. (2015). *दृश्य कला शिक्षा में अपसारी सोच को बढ़ाना: मेटाकॉग्निशन के स्पष्ट निर्देश के प्रभाव*। (ईजे1052144).

सिंह अ.कु. (2022). मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां। मोती लाल बनारसी दास, दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, कोलकाता बंगलूरू, वाराणसी, पटना।

सिंह अ.कु. (2019), शिक्षा मनोविज्ञान। भारती भवन, पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स।

मुरुगन डी. सेंथिल & राजम्मल, टी. शिवशक्ति “बी.एड. प्रशिक्षुओं के लिए शिक्षण योग्यता पैमाने (टीसीएस) का विकास.” मानवता विज्ञान और अंग्रेजी भाषा के लिए विद्वानों का शोध जर्नल, ऑनलाइन आईएसएसएन 2348-3083। एसजे इम्पैक्ट फैक्टर 2017: 5.068, www.srjis.com पीयर रिव्यूड जर्नल, अगस्त-सितंबर 2018 वॉल्यूम-6/29.